Raga of the Month July 2022 Raga Shivtilak

राग शिवतिलक

कल्याण, भैरव, सारंग, मल्हार, कानडा, तोड़ी, बहार आदि रागोंके मिश्रणसे बने रागों से हम परिचित हैं। उसी तरह राग शंकरा का मूल स्वरूप रखते हुए उससे बने हुए अनेक जोड़ राग हैं। मगर राग शंकराके ये अलग जोड़ राग-प्रकार मैफिलोंमे क्वचितहि गाये जाते हैं। अगले कुछ भागोंमें हम शंकरा के ऐसे जोड़-राग सुनेंगे। अप्रैल महिनेमे हमने राग शंकराबिहाग/ शंकराबरन तथा मई महिनेमे राग शंकराकरणका और जून महिनेमे राग गौरीशंकरका परिचय कर लिया और उन रागोंके गायनके नमुने सुने। आज हम राग शिवतिलक सुनेंगे।

यह राग पंडित गोविंद नारायण नातूजीकी निर्मिति है। यह राग शंकरा और तिलककामोदका संमिश्रण है।

राग शंकराके अन्य जोड़ रागोंका निर्माण बुजुर्ग गायकोंने किया है- वे हैं :

शंकराहरण- ग्वालियर घराना परंपरा - शंकरा और हमीरका जोड़;

शंकरानन्द- (पंडित छोटा गन्धर्व निर्मित)- शंकरा और नन्दका जोड़;

बसंतीशंकरा - (पंडित छोटा गन्धर्व निर्मित)- शंकरा और बसंतका जोड़;, इत्यादि।

जयतशंकरा - स्वर्गीय गायनाचार्य पं रामकृष्ण बुवा वझे की किताब संगीत-कला-प्रकाशमें इस रागका वर्णन मिलता है- शंकरा और जैत कल्याणका जोड़।

राग शिवतिलकमे सब स्वर शुद्ध लगते हैं। राग तिलक कामोद की विशेष स्वर पंक्तियाँ

सापृ, सानि सा गरे ग रेसा, रेग सारे, रेप म ग, गरेम धपध पम ग, निसा रे ग सा नि ।

राग शंकरा की विशेष स्वर पंक्तियाँ

सा निसा, पग प, रेग रेसा, पग प नि धनि धप पग प रेग रेसा, पग प, नि ध सां नि , नि धनि प, पग गप, रेग रेसा ।

एक रागसे दूसरे रागमें इन दो रागोंके विशेष स्वर पंक्तियोंके कण युक्त उच्चार द्वारा आसानीसे प्रवेश करके इस मिश्र रागको न्याय दिया जा सकता है। षड्ज वादी पंचम संवादी मानना राग स्वरूप के अनुकूल होगा।

राग शिवतिलकके आज के ऑडियो में हम पंडित गोविंद नारायण नातूजीने रची हुई दो बंदिशे सुनेंगे। पहली विलम्बित बंदिश " मुख ऊपर किन्ही जो बढ़ाई " और दूसरी द्रुत बंदिश " साधत काज बिन लगन नाही " । दोनो बंदिशे अपूर्वा गोखलेजीने गायी हुई है।

आभार-गीत समूह-रचनाकार पं.गोविन्द नारायण नातू; पं. यशवंत महाले; अपूर्वा गोखले

०१-०७-२०२२

Link to the list of 120+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx